HIN3B14b_cours-05-2013-02-26-Hindi-Urdu-Hindustani-Dakhini Hindi

हिन्दी ⇔ उर्दू ⇔ हिन्दुस्तानी ⇔ दक्षिणी हिन्दी

1. आधुनिक आर्य-भाषाओं के जन्म के कुछ समय बाद ही भारत पर विदेशी हमले हुए। हमला करने वालों की अपनी भाषा और संस्कृति थी, लेकिन उन्होंने भारतीय भाषा और सभ्यता को अपनाया।
2. मुसलमानों के आने से पहले ही खड़ीबोली का जन्म हो चुका था। यह खड़ीबोली ही बाद में हिन्दी और उर्दू का आधार बनी।
3. शुरु में मुगल शासक तुर्की थे। उन्होंने 'हिंदवी' या 'हिन्दी' को ही अपनाया। अमीर खुसरो तुर्की थे। उन्होंने हिन्दी को ही स्वीकार किया। उन्होंने लिखा है – "मैं हिन्दुस्तानी तुर्क हूँ और हिन्दी में जवाब दे सकता हूँ। मेरे पास मिस्र की शकर नहीं कि अरब की बात करूँ।" दफ़्तरों की भाषा के रूप में फारसी का प्रयोग बाद में शुरु हुआ।
4. फारसी भाषा को जिस प्रकार भारत के हिन्दू सीखते थे उसी प्रकार मुसलमान भी। क्योंकि भारत के मुसलमानों की भाषा फारसी नहीं थी जैसा कि आम तौर पर सोचा जाता है।
5. हिन्दू और मुसलमानों के मेल-जेल से जो भाषा बनी वह उर्दू नहीं बल्कि हिन्दी ('हिंदवी') ही थी। दिल्ली के मुसलमानों की भाषा हिन्दी ही थी।
6. 'हिन्दी', 'हिंदवी', 'हिन्दुई' आदि हिन्दी के पुराने नाम हैं, उर्दू के नहीं।
7. 'उर्दू' शब्द का पहला प्रयोग 18वीं शताब्दी के अन्त में मसहफी की रचना में मिलता है। ध्यान रहे कि मुगल शासन को भारत में तब तक लगभग पाँच-छह सौ वर्ष हो चुके थे।
8. यहाँ एक सवाल खड़ा होता है - जिस भाषा के उदाहरण हमें 15वीं शताब्दी में मिलते हैं उसे 18वीं शताब्दी में ही उर्दू क्यों कहा गया?
9. उर्दू के पुराने कवि और लेखकों की भाषा में ठेठ हिन्दी के शब्दों की भरमार थी। ये दिल्ली के थे। लेकिन बाद में लखनऊ स्कूल ने इस पुरानी उर्दू में फारसी-अरबी शब्दावली भरना शुरु किया क्योंकि इस स्कूल का मूल उद्देश्य लखनऊ को दिल्ली से श्रेष्ठ सिद्ध करना था। इसके लिए इस स्कूल ने 'मतरुकात' (अलगाव) के सिद्धान्त को अपनाया। इसके लिए फारसी शब्दों, मुहावरों और यहाँ तक कि क्रिया-पदों का भी जान-बूझकर प्रयोग किया गया।
10. इस 'मतरुकात' (अलगाव) को बढ़ाने में अवध दरबार के कवियों की भाषा ने भी मदद की। इन कवियों की कोशिश अपने शासकों को खुश करना होता था। इस सामंतवादी मानसिकता के कारण ही उर्दू और हिन्दी में अन्तर होना शुरु हुआ।
11. उर्दू के लिए की गयी इस तरफ़दारी की वजह से ही बाद में हिन्दुओं ने हिन्दी में संस्कृत शब्द भरना शुरु किया। इसकी वजह यह भी थी कि उस समय हिन्दी में नयी तकनीकी शब्दावली की कमी थी। नए शब्दों के लिए हिन्दुओं ने संस्कृत को ही आधार बनाया।

12. मुहम्मद तुगलक ने 1327 ई. में दौलताबाद को राजधानी बनाया। 1347 में वहाँ बहमनी राज्य की स्थापना हुई। तारीखे-फरिश्ता के अनुसार उस समय दफ़्तरों में हिसाब-किताब हिन्दी में होता था। बाद में मुहम्मद तुगलक ने दिल्ली की जगह देवगिरि को राजधानी बनाया तो दिल्ली से गयी यह भाषा ही वहाँ 'दक्खिनी हिन्दी' बनी।
13. 'हिन्दुस्तानी' शब्द को शुरु करने में फोर्ट विलियम कॉलेज तथा डॉ. गिलक्राइस्ट का बहुत हाथ रहा। फोर्ट विलियम कॉलेज के अनुसार उस समय की भाषा के तीन रूप थे - (1) हाइकोर्ट की शैली (अर्थात् फारसी शैली) (2) बीच की 'हिन्दुस्तानी' (यानी 'हिन्दुस्तानी' शैली) (3) गँवारी हिंदवी।
14. पहली शैली के उदाहरण मीर, सौदा, वली और दर्द की रचनाएँ हैं। दूसरी शैली मुंशियों की बोलचाल की भाषा थी। इसे ही 'हिन्दुस्तानी' कहा जाता था। गिलक्राइस्ट इसके समर्थक थे। तीसरी शैली को हिंदवी कहा गया जो नीचे स्तर के नौकरों और हिन्दुओं की भाषा थी।
15. फोर्ट विलियम कॉलेज की नीति के अनुसार दूसरी शैली अर्थात् 'हिन्दुस्तानी' को बढ़ावा मिलना चाहिए था। बाद में भारतीय कांग्रेस ने भी इसी शब्द को प्रचलित करने में योगदान दिया। गाँधी भी इसी भाषा को राजभाषा बनाने के पक्ष में थे।
16. गिलक्राइस्ट की 'हिन्दुस्तानी' का आधार 'हिंदवी' ही था। 'हिन्दवी' शुरु में जनसाधारण की बोली थी, लेकिन बाद में इसमें अरबी-फारसी शब्द आए। इसप्रकार 'हिन्दुस्तानी' कोई स्वतंत्र भाषा नहीं है बल्कि यह हिन्दी का ही एक सरल बोलचाल वाला रूप है।
17. 'हिन्दुस्तानी' शब्द का इस्तेमाल हमेशा राजनीतिक कारणों से हुआ है। गाँधी ने इस शब्द का उपयोग भारत में भाईचारा बढ़ाने के लिए किया।

'हिन्दी' शब्द के नए अर्थ

1. भारत की राजभाषा – अनुच्छेद 343 खंड 1 के अनुसार "**संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी।**" हिन्दी सभी भाषिक समाजों के बीच सम्पर्क-सूत्र के रूप में काम करेगी। आजकल हिन्दी भारत के त्रिभाषा-सूत्र में है।
2. बोलियों के वर्नाक्यूलर के रूप में हिन्दी (1) ब्रज, बुंदेली, अवधी, भोजपुरी, मैथिली, मगही आदि बोलियों के बीच सम्पर्क-सूत्र की भाषा (2) खड़ी बोली का वह रूप जिसमें अलग-अलग सामाजिक तथा साहित्यिक शैलियों का समावेश है- जैसे, संस्कृत के तत्सम शब्दों वाली उच्च हिन्दी, अरबी-फारसी के शब्दों वाली उर्दू तथा समान्य हिन्दी आदि।
3. इस प्रकार आजकल भारत में हिन्दी जानने वाले लोग चार तरह के हैं – (1) हिन्दुस्तानी जानने वाले (2) उच्च हिन्दी जानने वाले (3) उर्दू जानने वाले (4) उच्च हिन्दी तथा उच्च उर्दू जानने वाले।